IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पीली आँधी : मारवाड़ी स्त्री जीवन के विभिन्न स्वर

डॉ. मोनिका भाम्भू कलाना

सहायक आचार्य, हिन्दी

श्रीमती नर्बदा देवी बिहानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

नोहर, राजस्थान।

प्रस्तावना

मेरा यह शोध-पत्र बीसवीं सदी के प्रारम्भ में अपनी जमीन छोड़कर दूर कमाने निकले मारवाड़ी परिवारों की पारिवारिकता पर केंद्रित है। 'पीली आँधी' उपन्यास का नाम भर नहीं है बल्कि यह मारवाड़ी सामाजिक पृष्ठभूमि की ओर गहरा संकेत भी है। पारिवारिकता के मूल में है विवाह नामक संस्था। धोरों में पैदा होकर बंगाल तक जाने की कहानी का सच गरीबी से उठकर बड़े- बड़े औद्योगिक घराने खड़े करने तक का ही नहीं, उसके पीछे भी बहुत कुछ छिपा है। कहने को तो इस उपन्यास में मारवाड़ी बणियों की कहानी है लेकिन इसे मारवाड़ी समाज के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उस समय की तो बात ही क्या करें मारवाड़ी परिवारों में विवाह आज भी एक सामाजिक कार्य है। भले ही इस वजह से असंख्य व्यक्तियों की जिन्दगी में 'पीली आँधी' आई हो, तब भी हर व्यक्ति ने समाज के सामने स्वयं को तुच्छ मानकर समर्पण कर दिया है। मरुस्थल जो सहनशीलता मनुष्य को सिखाता है मारवाड़ी उस सहनशीलता के पहाड़ बनकर खड़े हुए हैं। लेकिन पहाड़, पहाड़ ही होता है वो महान होते हुए भी अपनी स्वाभाविक सीमाओं से बंधा हुआ होता है। पहाड़ नदी नहीं बन सकता उसे किसी दिन पुनः मरुस्थल ही में तब्दील हो जाना होता है। कैसे ये मारवाड़ी समाज भी संवेदनहीन होकर ठूंठ वृक्षों और लाचार पहाड़ों में बदलते गए हैं, किस तरह इनकी व्यापारिकता ने न केवल इनके घरों, रिश्तों और दाम्पत्य जीवन में स्थायी जगह बना ली है बल्कि ये सब इनकी व्यापारिक सफलता के औजार मात्र बन गए हैं यह सब सवाल खड़े करता है। इसमें दिखाया गया है कि तमाम

आधुनिकताओं और सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने के बावजूद ये मारवाडी परिवार किस हद तक अन्धविश्वासी हैं इनकी कोठियों की मोटी दीवारें स्त्री की वह सीमा है जिसके आगे जाने पर न उनका वापस लौटना सम्भव होता है न ही घर उनका रहता है। वहीं दूसरी तरफ विद्रोह के कुछ स्वर भी देखने को मिलते हैं।

मारवाड़ी जीवन के ढर्रे को व्यक्त करती बहुत सुन्दर पंक्तियां इस पुस्तक में आती है जिससे जीवन के प्रति मारवाड़ी दर्शन को मोटे तौर पर लोक जीवन के साथ जोड़कर समझ सकते हैं। यह इस पूरी पुस्तक का एक तरह से केन्द्रीय तत्व है और हम उपन्यास पढ़ते हुए बराबर यह महसूस करते हैं कि हर पात्र भले ही वह घर की मुखिया के तौर पर दूसरों की जिन्दगी को नियन्त्रित करती पद्मावती हो या बिल्कुल चुप्पी के साथ सब झेलती छोटी बहू सोमा, हर किसी की एक सीमा है हर कोई हुंकारा भरने वाली जिन्दगी जीने को ही बाध्य है।

"चाचा मैं जब छोटा था ना तब दादी के साथ सोता। दादी कहानी कहती और फिर बीच-बीच में टोक बैठती - "माधिया सो गया क्या? मैं बोलता - "नहीं दादी !"

"तब दादी कहती - हुंकारा भर!"

"मैं कहता - हां दादी !"

दादी कहती - "बेटा यह कहानी नहीं है, जीवन का सच है ...इससे बहुत कुछ सीखेगा।"[1]

मारवाड़ी संस्कृति को अभिव्यक्त करने वाले लोक शब्द

मारवाड़ी जीवन को अभिव्यक्त करने के लिए लेखिका ने सैकड़ों ऐसे मारवाड़ी शब्दों का प्रयोग किया है जो दिनचर्या में प्रयुक्त होते हैं। यह उनकी भाषा ही नहीं मारवाड़ी संस्कृति पर पूरी पकड़ प्रदर्शित करता है। उपन्यास में आए कुछ मारवाड़ी शब्द दिए हैं -बीनणी, छाछ, घूंघट, टाबर, पोमचा, सोणी, फालसाई, तिबारा, गीगा, जडुला, गिनौड़ा, बोरला, फाणी, नेग, तील, दिसावरी, नोहर, लीलगर, घणा, कुचरनी, रीती, नवोढ़ा, ननदल, लाप्सी, टिक्कड़, हेली, रातीजुगा, चूरमा, परसाद, कलसी, कोस, मालण, लाय, गढ़ी, पालर, जीमना, ढोर-डांगर, तावड़ा, लू, आंच, खोंस, माचे, हम्बा, ब्याह, व्यलू, पीढ़े, बालू, ढूहे, धाडैतियों, बिरखा, लुगाई, उंवार, पीतसराजी(चाचा ससुर), मूंठ, कद, पूचगां, लुगड़, दरी, स्यावफ, आढी भोभर, मायत, उबटन, हल्दात, भीत,

1 खेतान, प्रभा, पीली आँधी, लोकभारती प्रकाशन, 2018 : 72

मैतव, टीबे, बलत, पूरपल्ला, झपीड़ा, नचिंती, मोट्टयार, जवाण, चोखा, घराणा, मतैई, जासी, करड़-करड़, जीमना, सांची, तिजूरी, रूखाली, सगले, रोला, खूंदती, ओलमा, गासिया, गीट, खेलरौ, काचर-सी, फांकी, डाकी, मोकला, तगादा, पदचम्पी, देवाल, लेवाल, नट, लोटिया, अबखायां, हबोला, रीस, राजीपौ, भोत, चिड़ोकली, धुक्कम-फजीयत, गाड़ा, टांड, बेसी, बोकी, चट्टू, बडोरी, टसकती, सुधी, सुड़की, चूंटों, डुरिया, फोकट, रिपिया, करूंदा, आंवड़ा, कैर-सांगर, मावड़ी, आखती, भिंगोएं, बूफन, शऊर, पलीता, स्याणफ, थावस, भू, खारी, टैणिया, घाल, बोबे(स्तन), गेरनी, पंचोल।

प्रस्तुत उपन्यास के प्रमुख चरित्र

किशन, राधाबाई, करनीबाई (पद्मावती), माधोदास, म्हालीराम जी, कुंवर मानसिंह, राजा उमंगसिंह जी, मोहन, रेवाबाई, सोमा, सुजीत, गौतम, उमाबाई, कुसुमबाई, निमलीबाई, राजू, लता, पन्नालाल, केशरदेव आदि।

विवाह और उनसे जुड़ी अन्य समस्याएं

राधाबाई और किशन के सन्दर्भ में दांपत्य की समस्या सबसे पहले दिखती है। बणिए के लिए व्यापार पहले है उसकी भावनाओं का कोई मूल्य नहीं, धन जोड़ने में उसके जीवन की सार्थकता है। चौदह साल की राधाबाई तीन साल तक किशन का इन्तजार करती है और उनके आने पर उन्हें रातों-रात भागना पड़ता है। अपने से चार साल छोटे माधो को वह अपना बच्चा मानकर पालती है।

विवाह को व्यक्तिगत न समझना पूरे मारवाड़ी पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था की ऐसी आधारभूत समस्या के रूप में निकलकर सामने आती है जो आगे आने वाली समस्याओं के लिए अंकुरित बीज बन जाती है। पारिवारिकता की धूरी विवाह के इर्द-गिर्द ही घूमती है। और जब विवाह संस्था में, उसके संचालन में ही दिक्कत हो तो पूरी सामाजिक व्यवस्था ही सवालों के घेरे में आ जाती है। माधो के विवाह के सन्दर्भ में सर्वप्रथम इस समस्या से हम रूबरू होते हैं। विवाह के समय न तो माधो की राय ली जाती है ऊपर से व्यक्ति को न देखकर उसकी कमियों को नजरअंदाज करते हुए लड़की के परिवार से रिश्तेदारी कितना फायदा व्यापार में देगी जैसे बिन्दु शादी तय होने के आधार बनते हैं। यही नहीं गलती पता लगने पर भी सामाजिक डर से शादी तोड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता, बल्कि भाग्यवादी बनकर जो हुआ उसे उचित ठहराने की भी कोशिश की जाती है। माधो के दूसरे विवाह की बात करने पर किसन कहते हैं, "नहीं महाली चाचा, हमारी सात पीढ़ी

में किसी की दूसरी लुगाई नहीं आई, लंगड़िया बाबा की दया से बीनणी ठीक हो जाएगी।"[2] पीढ़ी दर पीढ़ी ये गलतियां दोहराई जाती है, व्यक्ति कीमत चुकाता चलता है और परिवार अपनी नाक समाज के सामने बनाए रखता है।

माधो का पहला विवाह एक दुर्घटना साबित होता है। माधो का दूसरा विवाह पद्‌मावती के साथ जब होता है तब उनकी उम्र में बहुत फासला होता है इसे एक तरह से अनमेल विवाह कहा जा सकता है। माधो अनपढ़ होकर भी विवेकशील पात्र है लेकिन वही अपनी मर्जी से ऐसा विवाह करता है जिसका खमियाजा पद्‌मावती को लम्बे वैधव्य के रूप में भुगतना पड़ता है। यही नहीं यही पद्‌मावती जब आगे जाकर स्वयं घर की कर्ता-धर्ता बन जाती है तो उसके भी वही सामाजिक संस्कार उभर कर सामने आते हैं। व्यक्ति फिर गौण हो जाता है और शादी के लिए पैसे वाला परिवार ही प्रथम शर्त बन जाती है। यह सब चलता रहता है सालों-साल। मोहन का संबंध तय करते वक़्त "ताईजी का अपने देवर यानी सांवर बाबू से कहना था, "देवरजी पहला सम्बन्ध घराने का होना चाहिए। अपने को घर सारू लड़की चाहिए। अच्छा स्वभाव चाहिए। नहीं तो कल देवर, ननदों का हक और दबाकर बैठ जाएगी।"[3]

यहां एक तरफ तो समस्या दहेज के साथ जुड जाती है। दहेज मारवाड़ी परिवारों में वैवाहिक संबंधों के लिए मानक की तरह कार्य करता है। यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि विवाह को वे व्यापार फैलाने के औजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसीलिए "पद्‌मावती लता को कहती भी है कि मेरा राजू तो सस्ते में बिक गया।" लेकिन छ्ले जाकर वे खुद औजार साबित होते हैं और विवाह जैसी संस्था अपना औचित्य बनाए रखती है। हथियार भी किस तरह मनुष्य के लिए खतरनाक हो जाता है यह इसका उदाहरण है। राधाबाई माधो की रोगली बीनणी के बारे में नहीं माधो के बारे में चिंतित होती है लेकिन उसकी चिंता केवल बीनणी की मृत्यु में ही समाधान देखती है और बीनणी द्‌वारा लाये गये दहेज से प्रसन्न होकर सोचती है, "माधो की बीनणी सासू के सामने दान-दायजा भी अच्छा लाती, लेकिन मिरगी के दौरे पर तो किसका वश चले।"[4]

2 खेतान, प्रभा, पीली आँधी, लोकभारती प्रकाशन, 2018 : 63

3 वही : 135

4 वही : 64

किसी सुधार का न होना

वहीं दूसरी तरफ अशिक्षा की वजह से एक और समस्या सामने आती है वह है सहानुभूति और संवेदना की समझ न होना। इसी से यह सम्भव होता है कि शोषित व्यक्ति शक्ति आते ही स्वयं शोषक में बदल जाता है। पद्मावती स्वयं पीड़ा झेलती है किन्तु वह अपनी बहुओं को व्यक्ति की नजर से न देखकर बहू ही बनाए रखना चाहती है। जिस तरह समाज की बलिवेदी पर उन्हें स्वयं को होम करना पड़ा वैसे ही त्याग की उम्मीद वे अपनी पढ़ी लिखी बहुओं से भी रखती है। कोई सुधारवादी नजरिया कहीं नहीं मिलता। वही त्याग की सीख चलती रहती है और जिंदगियाँ होम होती रहती हैं। ताईजी का यह कहना, " बेटा ! लुगाई की जात को सुख नहीं खोजना चाहिए। त्याग में शान्ति है।"[5] या "छोटी तुम समझदार नहीं हो। घर की नींव में ईंट नहीं होती, बेटा ! हम स्त्रियों का त्याग होता है।"[6] जैसी बातों से यह साफ झलकता है कि मारवाड़ी स्त्रियों को इस जीवन दर्शन में कोई खामी नजर नहीं आती, वे जिस सहजता से पुरुषवादी सत्ता को स्वीकार कर सिर झुका देती हैं इसी में अपनी सार्थकता और बड़ाई महसूस करती है। अपने परिवारों का सच ही उनके लिए दुनिया का सच है वही उनकी उम्रभर की पूँजी का निचोड़।

विवाहेत्तर संबंधों की समस्या

व्यक्ति की सहमति से न होने वाले विवाहों की वजह से विवाहेत्तर संबंधों की समस्या पनपती है। और विवश व्यक्ति इसके लिए खुद को जिम्मेदार भी नहीं महसूस करता, उसके पास तर्क होता है कि जब शादी उसकी मर्जी से नहीं हुई तो चोरी-छिपे वह अपनी संतुष्टि के लिए जो भी करे जायज है। ऐसे में विवाहेत्तर और नाजायज संबंधों का बनना सामान्य बात है। मोहन भाई अपनी पत्नी से संतुष्ट नहीं है वे अपनी साली से संबंध रखते हैं और इसका कोई अपराध बोध भी उनके मन में नहीं है। इनके संबंध का पता उनकी पत्नी को भी है लेकिन कुछ कहने की सामर्थ्य उसकी नहीं है। वो इसकी वजह भी अपना सुन्दर और शोख न होना ही मानती है। सोमा सोचती है, "इस घर के कर्ता में शर्म-हया कुछ नहीं और भाभीजी ? किसने उन्हें यह सब सहने के लिए मजबूर किया ? भाई साहब ने ? ? मगर क्यों ? मन लायक पत्नी नहीं है।××××लेकिन इसमें भाभीजी का क्या दोष ? उनका चुनाव किसने किया ? भाई साहब का कहना है कि, उन्होंने अपनी पत्नी का

5 वही : 253

6 वही : 253

चुनाव नहीं किया। तब क्या? हां °°°हां ताईजी को बड़े घर की बेटी की जरूरत थी। लेकिन क्यों? इस पैसे वाले परिवार को और अधिक पैसों की क्यों जरूरत थी? नहीं घराने का संबंध जरूरी था"[7]

वहीं सोमा और गौतम के दांपत्य संबंध के असहज रहने के पीछे गौतम की समलैंगिकता है। गौतम के नाजायज संबंध पुजारी भैया और अन्य से भी है यह बात पूरे परिवार को मालूम होते हुए भी कोई मुँह नहीं खोलता। वहीं जब सोमा गर्भवती होती है तो घर में तुफान आ जाता है हर कोई उसी को बुरा बताता है उसी को कुलटा साबित करता है गौतम की कमी तब भी ताईजी के अलावा किसी को नहीं नजर आती। गलती किसी की भी हो भुगतभोगी तो स्त्री ही बनती है उसके सपने देखना, उनके पीछे भागना तो एक बड़ी समस्या है ही, उसकी चुप्पी भी एक बड़ी समस्या है, वह चुप रहे तो बड़ी भाभी की तरह मिट्टी या पत्थर का लौन्दा समझ ली जाती है जिसमें न भावना होती है न बुद्धि ही।

मारवाड़ी स्त्रियों की असहाय स्थिति

मारवाड़ी परिवारों में न केवल स्त्रियाँ अपने घर की दीवारों में कैद हैं बल्कि वे हर तरह से असहाय भी हैं उनकी असहायता दिनचर्या के हर काम में प्रकट होती रहती है। पद्मावती स्वयं महिला होकर भी जिस तरह रौब दिखाती है और घर में ही नहीं सभी के दिलों में एक आतंक बनाए रखती है, उसके पीछे महिला पुरुष का सवाल नहीं होकर कमाने और खाने वाले के बीच का संबंध है। पूंजी ही एकमात्र कारक है जो इन परिवारों में सत्ता तय करती है। औरत के असहायपन का चित्रण बार-बार आता है। औरत न केवल पुरुषों के मामले में बल्कि अपने ही घर की दूसरी स्त्रियों के बारें में भी बिल्कुल चुप और असहाय महसूस करती है। बहुत करीबी संबंध भी उनके लिए कितनी जल्दी पराए हो जाते हैं यह भी उपन्यास में दिखाया गया है। सोमा शादी के बाद न मायके की रहती है न ससुराल की, वह अधरझूल में रहती है। उसे समझ नहीं आता उसकी गलती क्या है आश्चर्य यह है कि जिस पति का चुनाव स्वयं उसके माता पिता ने बगैर उसकी मर्जी के किया उसके निकम्मेपन के लिए भी वही जिम्मेदार ठहराई जाती है। स्त्रियाँ न केवल मुँह बंद रखने को बाध्य होती है बल्कि अपने सिले मुँह के साथ घर के पुरुषों की अतिरिक्त खुली जुबान से होने वाली गलतियाँ बर्दाश्त करने को भी वही विवश होती है। सोमा अपने पीहर जाकर सोचती है, "नहीं, कोई तर्क नहीं चल सकता। पापा-मम्मी ही क्यों किसी के सामने सोमा का कोई तर्क नहीं चल सकता। क्या वह गौतम के बारे में भी किसी से कोई बात करने लायक है? उसको तो खुद ही डर लगा रहता है कि कहीं उसकी अपनी जिंदगी का

7 वही : 209

सच सामने न आ जाए। क्या ये बातें किसी से कही जा सकती हैं।"[8] वहीं सोचती हुई सोमा, "रो पड़ी थी, सोमा। बिल्कुल रो पड़ी थी। अपने लिए? मिस हैरियट के लिए? मरियम के लिए? सोमा को लगा औरतें हमेशा रोती रहती हैं, रोना उनकी आदत है।"[9]

स्त्रियों का अकेलापन, सीमित दुनिया का होना

इन बड़े और संयुक्त परिवारों में भी स्त्रियाँ खासकर पढ़ी लिखी स्त्री किस कदर खुद को अकेली, असहज और एक तरह से गैर जरूरी और 'मिसफिट' महसूस करती है इसकी बयानगी भी उपन्यास में है। सोमा सोचती है, "कोई कुछ नहीं बोलता। न कहीं कोई प्रश्न है और न ही उत्तर। न कोई सुनाने वाला। आखिर मैं इतनी अकेली क्यों हूँ? और वह भी इतने बड़े घर में ! इतने सारे लोगों के बीच?"[10] परिवार में इतनी स्त्रियों के होते हुए भी उनमें किसी स्तर पर एकता नहीं दिखती, कोई संघटन की भावना नहीं दिखती है आपस में शिकायतें होती रहती हैं किन्तु कहीं भी उन समस्याओं से लड़ने का जुझारूपन नहीं दिखता, जो कुछ है जो भी पारिवारिक सत्ता द्वारा निर्धारित कर दिया है उसमें किसी परिवर्तन की गुंजाइश भी हो सकती है यह सोच कहीं नहीं मिलती, सोमा जैसी बेल्हम पढ़ी लड़की भी, जो जैसा है उसे उसी तरह स्वीकार कर लेती है। जो भी है, उसे नियति मानकर स्वीकारना, मारवाड़ी स्त्रियों की एक बहुत बड़ी समस्या है। तथाकथित घरानों की ये बहुएँ अपने आप में कुछ नहीं हैं, कोई पहचान इनकी नहीं है। इतना ही नहीं, कोई व्यक्तिगत जीवन इनके पास नहीं है और धन के अलावा उनका स्वयं का कुछ होना चाहिए, यह चेतना भी इनमें कहीं नहीं है। सोमा सुजीत को कहती है, "हां, सुजीत, रूँगटा हाउस का महत्त्व बहुत बड़ा है। ऊँची शान है। लेकिन मेरी नहीं। मुझे किसी भी निर्णय का अधिकार नहीं। मैं यहां कुछ भी नहीं। कुछ भी नहीं।"[11]

इन बहुओं को बाहरी स्त्रियों तक परिचय या मेलजोल रखने का अधिकार नहीं है। इनका बोलना और चुप होना सब इनके घरों के मुखिया द्वारा तय होता है निजता नाम की कोई चीज कहीं नहीं है हर जगह एक कैमरा और सेंसर लगे हैं जो तत्काल प्रभाव से अपना निर्णय देते हैं। अपने घर की देहरी तो ये स्त्रियाँ लाँघ ही नहीं सकती लेकिन घर की देहरी तक भी इनका अपना कितना क्या है ? यह सवाल बना ही रहता

---

8 वही : 227

9 वही : 236

10 वही : 236

11 वही : 241

है। स्त्रियों के मनोरंजन के साधन घर में होने वाली पार्टियाँ ही हैं हालाँकि पार्टियाँ उनके लिए नहीं होकर दिखावे की संस्कृति को बनाए रखने के लिए ही होती हैं। पार्टियों में भी बहुओं का पूरा व्यवहार कार्यक्रम की तरह पहले से ही तय होता है। सोमा और ताईजी बात करती हैं, "ताईजी धीरे से मुस्कुरा कर कहतीं - "देखो, छोटी बीनणी ! हंसी- मजाक बातचीत जो भी करो, अपने परिवार में देवरानी, जिठाणी, ननदों के बीच, अपने कुटुंब में रहो। लेकिन किसी दूसरे परिवार की बहू के साथ बात करोगी ना, तब बिना बात की फिजूल पंचायत होगी। ऐसी भायलियां लगा-बुझा कर घर खा जाती हैं। यानी आपस में परिवार में कलह करवा देती हैं। तुम उसका करोगी, वह तुम्हारा करेगी। क्या पड़ा है लेन-देन में, ज्यादा व्यवहार में, बस अपने काम से काम रखो।"[12]

प्यार

रूढ़ मारवाड़ी जीवन के बीच कहीं कहीं भावना से सना हृदय भी मिलता है। प्यार भी प्रकट-अप्रकट रूप में मिलता है। एक तरफ है सुराणा जी और पद्मावती का गुप्त प्रेम वहीं दूसरी तरफ है सोमा-सुजीत का प्रकट प्रेम। पद्मावती और सोमा के बीच केवल एक पीढ़ी का अन्तर नहीं है, शिक्षा, स्तर और उनकी पृष्ठभूमिओं का भी स्पष्ट अन्तर है। पद्मावती परिवार की जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है और पारिवारिक व्यवस्था को बनाए रखने हेतु अपने प्रेम की बलि दे देती है। वहीं सोमा हिम्मत से काम लेती है पूरे जीवन दूसरों की सुनने के बाद वह अपने दिल की सुनती है अपनी दबी इच्छाओं को पूरा करने का अवसर जब उसके सामने आता है तो पूरी व्यवस्था के खिलाफ डटकर खड़े होने का आत्मविश्वास वह हासिल करती है और सबकी समझ को दरकिनार कर पहली बार अपनी निजता को सम्मान देती है। पद्मावती और सोमा के प्रेम का एक फ़र्क यह भी है कि सुराणा जी खुद उसी व्यवस्था से आते हैं जो पद्मावती की है वहीं सुजीत की पृष्ठभूमि अलग है उसके जीवन में कहीं कोई बाध्यता नहीं होने से सोमा को साहस मिलता है। सुराणा जी और पद्मावती के प्रेम का तो पता ही सुराणा जी की निजी डायरी से लगता है वे दोनों न व्यावहारिक और न ही किसी अन्य रूप में इसको बाहर प्रकट होने देते हैं उनके लिए प्रेम नितांत निजी भाव है और उसकी महत्ता उस निजता को बनाए रखने में ही है। सुराणा जी डायरी में लिखते हैं, "हां, आज मैं इन शब्दों को लिख पा रहा हूँ जिन्हें मैंने कभी अपने अचेतन में भी भूल से भी जगह नहीं दी थी। शब्दों को महसूस किया था मगर सपने में भी उनका उच्चारण नहीं किया था और अब यों औचक इतना बड़ा विस्फोट, तुमसे औचक ही यह कह बैठना कि, मुझे और कुछ नहीं बस तुम्हारी जरूरत है°°°°मेरे लिए और किसी बात का

12 वही : 213

नहीं बस तुम्हारा महत्त्व है°°°°°°कि, बड़े बाबू के जाने के बाद तुम्हारे और मेरे बीच जितनी बातें होती रहीं, घर-परिवार की, बच्चों की, छोटे बाबू की, मेरा ध्यान कहीं नहीं था बस तुम्हारे ऊपर था°°°"[13]

वहीं सोमा इस बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट है कि उसे क्या करना है। बहुत डर दिखाने के बावजूद उस पर कोई असर नहीं होता, वह अपने इस दुस्साहस के परिणामों से अवगत होते हुए भी 'रूंगटा हाउस' नाम के सुरक्षा चक्र से खुद को मुक्त करती है और जोखिम उठाकर अपने इस भाव को सम्मान देती है। गौतम और सोमा की बातचीत इस मुद्दे को लेकर कुछ इस तरह से होती है,

"तुम्हारा क्या होगा?"

"मुझे परवाह नहीं।"

"लेकिन तुमने ऐसा कदम क्यों उठाया?"

"मैं अपने प्यार के सामने विवश थी।"[14]

ये स्त्रियाँ प्यार की भूखी हैं वो कोई जो उनकी पीड़ा को समझ सके, सहला सके, उनके घरों में नहीं है। वे प्यार के लिए छटपटाती है उनके जीवन में कोई लक्ष्य या आदर्श नहीं है। सोमा मास्टर जी को कहती है, "कुछ नहीं। बस मुझे प्यार चाहिए। ढेर-सा। बहुत-सा और°°°और बच्चे चाहिए°°°"[15] यह प्यार उसे कहीं नहीं मिलता, न पीहर में, न ससुराल में।

विधवाओं की स्थिति

मारवाड़ी स्त्री अपने वैधव्य के साथ ही समाज के अंधविश्वासों को आसानी से स्वीकार कर लेती है। वह समाज में रहते हुए स्वयं को अछूत रखकर किस तरह उस पाप का पश्चाताप करती है जो उसने किया ही नहीं, जिसमें किसी भी प्रकार की कोई सहभागिता उसकी नहीं होती, इसका चित्रण भी प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। सोमा कपड़े बदलने के लिए जब विधवा रेवा बाई से उसकी साड़ी मांगती है तब वह कहती है, "भाभी,

13 वही : 274

14 वही : 249

15 वही : 231

तुम सुहागण हो, गंगाजी नहाकर मेरा ब्लाउज मत पहनो, मैं बड़ी भाभी का लाकर दे देती हूं।" सोमा को लगा कितनी सहजता से स्त्री, खासकर विधवा स्त्री अपनी हीन स्थिति को स्वीकार कर लेती है।"[16]

ठहरी हुई जिन्दगी

मारवाड़ी स्त्री का जीवन ढर्रे से बँधा हुआ है। सोमा सोचती है, "अपने ससुराल के बारे में, ताईजी के बारे में, सब कुछ कितना रिच्यूलाइस, क्रम से बंधा-बंधाया, कुछ भी तो नहीं बदलता इस घर में। दुनिया बदल सकती है लेकिन ताईजी°°° "[17] मारवाड़ी व्यक्तियों की सोच में, उनके जीवन में एक ठहराव मिलता है। सब ठहरा हुआ सा, कहीं कोई लहर नहीं, कोई गतिशीलता नहीं। सब पूर्व निर्धारित, एक सांचे में ढला हुआ। सीमाएँ, परिभाषाएँ, नैतिकता सब तय होती है उससे बाहर का जो भी हो उसके सही होने का सवाल ही नहीं उठता। यह कभी भी "सोमा सोच नहीं पाई। विचार नहीं पाई। उसको अंदाज नहीं हुआ कि, आखिर सब कुछ यथावत् क्यों स्वीकारना पड़ता है। परिवर्तन क्यों नहीं होता?"[18] परिवर्तन की कोई इच्छा भी नहीं दिखती, लकीरों को तोड़ने की तड़प भी नहीं मिलती। यह तड़प केवल सोमा में है लेकिन सोच के स्तर तक ही। वह केवल सोचती है इस बंधे-बंधाए क्रम के बारे में, उससे बाहर कैसे निकला जा सकता है या बाहर भी निकलना चाहिए इस बारे में वह बिल्कुल मौन है।

इच्छाओं का गला घोंटना

मारवाड़ी बहुओं की अपनी इच्छाएँ कहीं नहीं चलती, उनके मन का उनसे कभी नहीं पूछा जाता। उनके मन में खौफ इस तरह बैठ जाता है कि वे अपनी इच्छाएँ तक भूल जाती हैं। एक तरह का मानसिक अत्याचार उन पर होता है और उन्हें अपने शोषण का पता तक नहीं होता। मास्टरजी द्वारा सोमा से आदर्श पूछने पर दिए गए सवाल का जवाब अपने आप में पूरे मारवाड़ी स्त्री समाज का जवाब है। सोमा कहती है, "ओ°°°आदर्श। कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं। कभी इसके बारे में सोचा तक नहीं।"[19] भौतिक से लेकर उनके मानसिक जगत तक सब पर कोई और सत्तासीन है। खाना वे किसी और के मन का खाती हैं, वे अपने परिवार द्वारा तय

16 वही : 146

17 वही : 204

18 वही : 199

19 वही : 231

किया गया पहनती हैं, प्यार करने के लिए भी उनके घरवाले उन्हें चुन कर देते हैं, इसके अलावा सब वर्जित है, सब अछूत है। सोमा के ससुराल में आते ही पहले दिन ताईजी कहती है, "चुपचाप जो बना है खा लो। समझी, छोटी बीनणी। यहां यह सब अलग-अलग कानून नहीं चलेगा।"[20] वहीं सोमा को मास्टर जी से हँस-हँस कर बात करते हुए देखती है तब परोक्ष रूप से समझाते हुए ताईजी कहती है, "सोमा ! बात आगे बढ़े इससे पहले ही गांठ खोल देनी चाहिए, इच्छा की कली को तोड़ देनी चाहिए नहीं तो जीवन में "भोभर(आग) जलने लगेगा°°°°°°°°"[21]

मारवाड़ी परिवारों में आधुनिकता और परम्परा का द्वंद्व

परम्परा और आधुनिकता के बीच पिसते मारवाड़ी मानस का प्रसंग भी उपन्यास में आता है। ये मारवाड़ी किस तरह परम्पराओं के साथ बने रहते हुए आधुनिकता का दामन भी पकड़ना चाहते हैं यह दिखाया गया है। सोमा सोचती है, "नहीं ! सोमा की माटी में ताईजी को पानी डालना ही नहीं पड़ा। सोमा के आंसू ही इस माटी को गीला करने के लिए काफी थे। सोमा ने सोचा यदि यही सब होना था, तो मुझे वेल्हम क्यों भेजा? और ये लोग भी तो अधबीच के हैं, परंपरा छोड़ पाते हैं, न निभा सकते हैं। आधुनिकता के प्रति ललक नहीं होती तो इस घर का हर बच्चा अंग्रेजी स्कूल में क्यों भेजा जाता है ?"[22] लेकिन अंग्रेजी स्कूलों में जाकर भी ये बच्चे जिस माहौल में पलते हैं उसी के जैसे बनकर उस सामाजिक परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं। आधुनिकता इनमें दिखाने भर के लिए ही होती है और यह दिखावा तमाम उम्र चलता रहता है।

मारवाड़ी स्त्री की निर्भीकता

जहाँ एक तरफ पढ़ी लिखी जिन्दादिल लड़की को असहाय औरत में बदलते दिखाया गया है। वहीं अपनी परिस्थितियों को नियति मानकर स्वीकार कर लेने के बाद सोमा को जब गलती सुधारने का मौका मिलता है तो वह पीछे नहीं हटती। एक निर्भीक स्त्री के रूप में प्रकट होती है और अपनी मरी भावनाओं में प्राण पाकर अपने पति, परिवार और समाज के सामने तनकर खड़ी हो जाती है। कितने लांछन मिलने का भय, आजीविका का संकट और पहचान का संकट आदि समस्याओं से पार निकलकर पहली दफा वह अपनी इच्छाओं को महत्त्व देती है और हाशिए से निकलकर अपनी जिन्दगी खुद जीने का फैसला करती है। उसके गर्भ का पता

20 वही : 175

21 वही : 233

22 वही : 214

लगने पर गौतम की दी हुई धमकियाँ या उसके द्वारा की गई चापलूसी कुछ भी उसे डिगा नहीं पाती है। सोमा की हिम्मत देखते ही बनती है। जब औरत अपने आरोपित खोल को उतारकर अपने वास्तविक रूप में प्रकट होती है तब किस तरह सारी ठोकरों का सामना करके अपने टुकड़े-टुकड़े हुए स्वाभिमान को जोड़ती है यह उपन्यास यह भी दिखाता है।

"और मैं यदि किसी से कुछ नहीं कहूं, तुम्हारे इस पाप को अपना लूं, तब भी तुम तलाक चाहोगी?"

"हां गौतम तब भी, मैं तलाक चाहूंगी।"

"वह तुम्हारा यार विवाहित है। एक बच्ची का बाप है।"

"मैं सब कुछ जानती हूं गौतम !"

और सब कुछ जानते हुए भी?"

"हां गौतम ! मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हूं। शायद इस घर से बाहर गौतम तुमको एक हजार रुपए की नौकरी नहीं मिले, लेकिन मुझे मिल जाएगी।"[23]

जब गौतम उसकी खुशियों के नाम पर उसे बहलाने की कोशिश करता है तब वह उसके प्रभाव में नहीं आती हुई कहती है,

"मेरी चिंता मत करो।"

"तुमको बाद में पता चलेगा। सोमा, अपनी इस भावुकता के लिए एक दिन, एक दिन तुमको बहुत पछताना पड़ेगा।"

"जैसे मैं इतने वर्षों से नहीं पछता रही थी।"[24]

और सदैव नारी के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल किये गये प्यार की बात गौतम के करने पर सोमा साफ कहती है, "और, तुम प्यार की बात करते हो? मैंने तुमसे कभी प्यार नहीं किया, नहीं तुम्हारी कोई स्मृति नहीं। हाँ मैं सुजीत को प्यार करती हूं। गौतम, मैं जीना चाहती हूँ। मैं जीना चाहती हूँ। यहाँ इस घर में

23 वही : 248

24 वही : 250

लोग साँस लेते हैं लेकिन जीते नहीं। वे जीना जानते नहीं। तुम्हारे ये हीरे? इनकी चमक से मेरी आँख दुखती है। और, जिंदगी की राह पर हीरे बिछाकर तो नहीं चल सकते।"[25] सोमा हमेशा अकेली और प्रताड़ित महसूस करती रही, उसके पास अपना कहने को कुछ नहीं था। वह अकेली घुटती रहती उन सवालों से जो उसकी शैक्षणिक चेतना की वजह से उत्पन्न हुए। सोचती रही कि क्या सभी मेरी तरह है? क्या कोई भी इस घर में खुश नहीं, आदि। इसी संकुचित समाज का हवाला गौतम उसे देता है तब वह उससे पूछती हैं, "गौतम, तुम किस समाज की बात कर रहे हो? वह जिनसे तुम पार्टियों में मिलते हो ? वह जो कला मंदिर में बैठकर तालियाँ बजाता है ? वह जो न्यू मार्केट में शापिंग करता है ? वह समाज नहीं गौतम। वह तो बस पैसे वालों का समूह है, एक जत्था। हवा में उड़ता हुआ पेड़। अपने आस-पास के माहौल से कटा हुआ, जमीन खोजता हुआ°°°°°°लेकिन इस समूह को जमीन नहीं मिल सकती।"[26] "गौतम यह घर लोहे की दीवारों से बना है। बहुत मजबूत है यह घर। यहाँ धूप नहीं आती, कहीं कोई सुराख नहीं। हवा नहीं घुस सकती।"[27] इस पर भी गौतम का पुरुषत्व से मढ़ा और संस्कारबद्ध अहंकार खुद में कोई कमी नहीं देखता और सोमा को ही लांछित कहता है उस वक़्त सोमा की पूरी सहनशीलता उस बिन्दु पर आ जाती है जहाँ वह केवल औरत होकर सोचती और गौतम को धिक्कारते हुए कहती है, "तुम बाहर करने वाले होते कौन हो, मैं खुद ही जाती हूँ।"[28]

निष्कर्ष

अन्ततः हम कह सकते हैं कि मारवाड़ी परिवारों में विवाह केवल स्त्रियों की समस्या नहीं है किन्तु मारवाड़ी स्त्री का पूरा जीवन उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। मारवाड़ी स्त्री का दायरा समाज द्वारा पहले से ही बहुत सीमित और अनुशासित है इस वजह से जिस आधार पर परिवारों में उनकी उपस्थिति और जगह बनती है उस आधार के कमजोर होने पर वे हर जगह उपेक्षित हो जाती हैं। वहीं दांपत्य जीवन के सुखी नहीं होने पर भी पुरुष घर और बाहरी दुनिया में अपने जीवन को संतुलित करने की कोशिश कर सकता है। गौतम, मोहन या मिस्टर अग्रवाल की बात करें तो वे अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट न होते हुए भी उसे बनाए रखते हुए

25 वही : 251

26 वही : 251

27 वही : 251

28 वही, पृ. 251

समानांतर खुल्लम-खुल्ला विवाहेत्तर संबंध रखते हैं तब कोई सवाल नहीं उठाता। वहीं सोमा को घर छोड़कर निकलना पड़ता है।

'प्रभा खेतान' के उपन्यास 'पीली आँधी' में मारवाड़ी लोक जीवन और संस्कृति का सशक्त चित्रण है। प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्ति के अलावा अन्य विभिन्न आधारों पर होने वाले विवाहों के दुष्परिणाम दिखाए गयें हैं। पारिवारिक स्तर पर होने वाले विवाहों से पनपने वाली अन्य समस्याओं की और भी प्रभा जी ने ध्यान दिलाया है। मारवाड़ी स्त्रियों के बंद, नीरस और ठहरे हुए जीवन के चित्रण के साथ उनके जीवन के भिन्न भिन्न सन्दर्भों को भी दिखाया गया है। यह भी दिखाया है कि आर्थिक रूप से परिवार पर निर्भर स्त्री के लिए दांपत्य जीवन की समस्या आखिर उसके जीवन की समस्याओं में शुरुआत की तरह आती है जिससे आगे से आगे नई-नई समस्याएँ निकलती रहती हैं और मारवाड़ी स्त्री उन्हें झेलने को विवश होती है। आर्थिक और सामजिक स्तर पर पराधीन मारवाड़ी स्त्री के जीवन में इस पूरी प्रक्रिया का होना उसे कैसे और किस हद तक प्रभावित करता है इसको अभिव्यक्त करने में भी प्रभा जी पूरी तरह सफल रही हैं।